क्षितिज भाग– 2 (गद्य–खंड)

अध्याय — 1 लखनवी अंदाज *(यशपाल)*

लेखक–परिचय

जीवन-परिचय- हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकारों, कहानीकारों एवं निबंधकारों में यशपाल जी का नाम उल्लेखनीय है। यशपाल जी का जन्म पंजाब के फिरोजपुर छावनी में सन् 1903 में हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा कांगड़ा में हुई। लाहौर में आगे की पढ़ाई करते समय ये क्रांतिकारी गतिविधियों से जुड़ गए तथा कई बार जेल भी गए। सन् 1976 में उनकी मृत्यु हो गयी।

प्रमुख रचनाएँ—दिव्या, झूठा सच, ज्ञानदान, अमिता, पिंजरे की उड़ान आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

भाषा-शैली—उनकी रचनाओं में भाषा की स्वाभाविकता व सजीवता दिखाई देती है। उन्होंने वर्णनात्मक एवं चित्रात्मक शैली का प्रयोग किया।

पाठ का सारांश

'लखनवी अंदाज़' नामक पाठ में लेखक ने एक ऐसे नवाब साहब का वर्णन किया है जो ट्रेन के सेकंड क्लास में यात्रा करते हुए अपनी रईसी का प्रदर्शन करने के लिए खीरे में नमक-मिर्च मिलाकर उसे खाते नहीं बल्कि सूँघते हैं और सूँघकर उसे ट्रेन से बाहर फेंक देते हैं। इस कहानी के यशपाल उस सामंती वर्ग पर कटाक्ष करते हैं, जो वास्तविकता से बेखबर एक बनावटी जीवन-शैली के आदी है। इस तरह के लोग जीवन के यथार्थ से दूर कल्पना की दुनिया में जीते हैं, जो अपनी रईसी का झूठा दिखावा करने में शान समझते हैं।

लेखक ने भीड़ से बचकर एकांत में नई कहानी के संबंध में सोचने और खिड़की से प्राकृतिक दृश्य देखने का आनंद लेने के लिए सेकंड क्लास का टिकट लिया। गाड़ी छूट रही थी अत: वह दौड़कर एक डिब्बे में चढ़ गया। उसने देखा कि वहाँ एक बर्थ पर एक लखनवी नवाब पालथी मारकर बैठे हुए थे। उनके सामने तौलिए पर दो ताजे-चिकने खीरे रखे हुए थे। लेखक को देखकर उनकी आँखों में एकांत में बाधा उत्पन्न होने का असंतोष उभर आया। लेखक ने सोचा, हो सकता है उन्हें खीरे जैसी साधारण चीज का शौक फरमाते देखे जाने के कारण संकोच हो रहा हो।

नवाब साहब ने लेखक की संगति के प्रति कोई उत्सुकता नहीं दिखाई इसलिए लेखक ने भी आत्म-सम्मान में उनकी ओर से दृष्टि हटा ली। लेखक यह सोचने लगा सम्भवत: नवाब साहब ने भीड़ से बचने के लिए सेकंड क्लास का टिकट लिया हो और अब शहर के ही किसी भद्र व्यक्ति द्वारा देख लिया जाना उन्हें गवारा न हो पर थोड़ी देर बाद ही नवाब साहब ने लेखक का अभिवादन करते हुए उससे खीरा खाने के लिए पूछा। लेखक को अचानक उनका भाव परिवर्तन अच्छा नहीं लगा। उसने सोचा कि वे शराफत का गुमान बनाए रखने के लिए ऐसा कर रहे हैं। अत: लेखक ने खीरा खाने से इनकार कर दिया।

नवाब साहब ने तौलिए को झाड़कर सामने बिछा लिया और दोनों खीरों को धो-पोंछकर उस पर रख लिया। उन्होंने खीरे के सिरों को काटकर झाग निकाला और फिर सावधानीपूर्वक खीरों को छीलकर फाँकों को सलीके से तौलिए पर सजा दिया। इसके बाद उन पर जीरा मिश्रित नमक और लाल मिर्च का चूर्ण छिड़क दिया। उनके हाव-भाव और जबड़ों के फड़कने से ऐसा लगा कि उनका मुख खीरे के रसास्वादन की कल्पना से भर गया है। नवाब साहब ने खीरे की ओर सतृष्ण आँखों से देखा और उसकी एक फाँक को उठाकर सूँघा और स्वाद के आनंद में पलकें मूँद लीं। उन्होंने अपने मुँह में भर आए पानी को गले से नीचे उतार लिया। इसके बाद उन्होंने खीरे की फाँक को खिड़की से बाहर फेंक दिया। इसी तरह वे सारी फाँकों को नाक के पास ले जाकर काल्पनिक रसास्वादन कर खिड़की से बाहर फेंकते गए।

सारी फाँकों को बाहर फेंककर नवाब साहब ने तौलिये से हाथ और होंठ पोंछे और गर्व से गुलाबी आँखों से लेखक की ओर देखा, मानो यह कह रहा हो कि यह है ख़ानदानी रईसों का तरीका। नवाब साहब खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थककर लेट गए। लेखक सोचने लगा कि यह है ख़ानदानी तहज़ीब, नफ़ासत और नज़ाकत।

लेखक सोचने लगा कि नवाब साहब के इस तरीके को सुगंध और स्वाद की कल्पना से संतुष्ट होने का सूक्ष्म, बढ़िया और अमूर्त तरीका तो माना जा सकता है, परंतु इससे उदर की तृप्ति नहीं हो सकती। नवाब साहब ने डकार लेकर बताया कि खीरा स्वादिष्ट तो होता है पर आसानी से पचता नहीं। नवाब साहब की बात सुनते ही लेखक के ज्ञान-चक्षु खुल गए। उसने सोचा जब खीरे की सुगंध और स्वाद की कल्पना से पेट भर सकता है और डकार आ सकती है, तो बिना विचार, घटना और पात्रों के लेखक की इच्छा मात्र से नई कहानी क्यों नहीं बन सकती?

शब्दार्थ

मुफ़स्सिल—केंद्रीय स्थान और उसके आसपास का स्थान, स्थानीय; **उतावली**—बेचैनी; **प्रतिकूल**—विपरीत; **निर्जन**—खाली स्थान; **एकांत-चिंतन**—अकेले में सोचना; **विघ्न**—बाधा; **अपदार्थ-वस्तु**—सामान्य-चीज; **आत्मसम्मान**—स्वाभिमान; **आँखें चुराना**—बचने का प्रयास; **खाली बैठना**—कुछ काम न करना; **किफ़ायत**—मितव्ययता, कम खर्च करना; **गवारा न होना**—स्वीकार न होना; **कनखियाँ**—तिरछी

नजर से देखना; **गौर करना**—ध्यान देना; **आदाब अर्ज़**—अभिवादन करना; **भाव-परिवर्तन**—भाव (विचारों) में परिवर्तन; **भाँप लेना**—समझ जाना; **शराफ़त**—सज्जनता, शालीनता; **गुमान**—घमंड; **लथेड़ लेना**—जबरदस्ती सम्मिलित करना; **किबला**—आप (सम्मानसूचक शब्द); **दृढ़ निश्चय**—मजबूत विचार; **एहतियात**—सावधानी; **करीने से**—अच्छी तरह से सजाना; **बुरकना**—छिड़कना; **भाव-भंगिमा**—चेहरे के हाव-भाव; **स्फुरण**—फड़कना, हिलना; **प्लावित होना**—पानी भर जाना; **असलियत**—वास्तविकता, सचमुच; **वल्लाह**—कसम से; **पनियाती**—पानी छोड़ती; **मुँह में पानी आना**—जी ललचाना; **तलब महसूस होना**—इच्छा करना; **सतृष्ण**—इच्छा सहित; **दीर्घ-निश्वास**—लंबी श्वास; **पलकें मूँदना**—आँखें बंद कर लेना।

❑❑

अध्याय — 2 मानवीय करुणा की दिव्य चमक *(सर्वेश्वर दयाल सक्सेना)*

लेखक–परिचय

जीवन-परिचय—बहुमुखी प्रतिभा के धनी व हिंदी की नई कविता के प्रसिद्ध साहित्यकार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म सन् 1927 में बस्ती (उ.प्र.) में हुआ। वहीं से इन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। आगे की पढ़ाई के लिए ये वाराणसी चले गए। बाद में एम.ए. इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पास कर ऑडीटर जनरल के दफ्तर में नौकरी की। इन्होंने बाल पत्रिका 'पराग' का सम्पादन भी किया। सन् 1983 में इनका निधन हो गया।

प्रमुख रचनाएँ—बकरी, लाख की नाक, भौं-भौं खौं-खौं, बतूता का जूता, चरचे और चरखे, सोया हुआ जल, लड़ाई आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। लेखक होने के साथ ही इन्होंने, काठ की घंटियाँ, खूँटियों पर टँगे लोग, कुआनो नदी जैसे काव्य-संग्रहों की भी रचना की।

भाषा-शैली—सक्सेना जी की भाषा में लोकभाषा के शब्दों की प्रचुरता मिलती है। मुहावरों का प्रयोग इनकी भाषा को उत्कृष्टता प्रदान करता है। इसके साथ ही विदेशी शब्दों का भी उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रयोग किया।

पाठ का सारांश

लेखक को दु:ख है कि फ़ादर बुल्के की मृत्यु गैंग्रीन से हुई। वे जीवन-भर लोगों को स्नेह की मिठास बाँटते रहे, फिर भी उन्हें गैंग्रीन हुआ। हम किस ईश्वर से पूछें कि बुढ़ापे में उन्हें ऐसा दु:ख क्यों मिला? वे सदा साधुओं जैसा सफेद लम्बा चोगा पहने रहते थे। उनकी बाँहें और आँखें सदा गले लगाने को आतुर लगती थीं। लेखक ने पैंतीस सालों तक उनके इस स्नेह को महसूस किया था। उन्हें याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा लगता है और देखना करुणा के निर्मल जल में स्नान करने जैसा। फ़ादर से बात करने पर मन में कर्म करने का संकल्प जागता था। जिन दिनों लेखक इलाहाबाद में था, फ़ादर भी 'परिमल' नामक साहित्यिक संस्था के सदस्य थे। वे उस परिवार में बड़े सदस्य के समान थे। वे गोष्ठियों में, विचार-विमर्श में और हँसी-मजाक में खुलकर भाग लेते थे। वे सबके पारिवारिक उत्सवों और संस्कारों में पुरोहित की भाँति उपस्थित रहते थे। लेखक के पुत्र के मुख में पहली बार अन्न उन्हीं ने डाला था। उनका वात्सल्य देवदारु-सा ऊँचा था।

फ़ादर प्राय: इलाहाबाद की सड़कों पर साइकिल चलाते हुए दिख जाते थे। वे हमेशा प्यार और ममता से छलकते रहते थे। मूलत: वे बेल्ज़ियम के वासी थे। घर में माँ, पिता, दो भाई और एक बहन थी। वे भारत को ही अपना देश मानने लगे थे। यूँ वे अपनी जन्मभूमि रेम्सचैपल को बहुत सुन्दर मानते थे। उन्हें अपनी माँ से भी गहरा लगाव था। अकसर उनकी माँ के पत्र उनके पास आया करते थे। डॉ. रघुवंश को वे माँ की चिट्ठियाँ दिखाते थे। उनके मन में पिता और भाइयों के प्रति विशेष लगाव नहीं था। भारत में बसने के बाद वे दो-तीन बार ही बेल्ज़ियम गए थे।

संन्यासी बनने के प्रश्न पर वे इतना ही कहते थे कि वे प्रभु की इच्छा से संन्यासी बने। जब वे इंजीनियरिंग के अंतिम वर्ष की पढ़ाई कर रहे थे तब धर्मगुरु के पास संन्यासी बनने के लिए पहुँचे। उन्होंने उनसे भारत में जाने की इच्छा रखी। भारत ही क्यों? इस पर वे कुछ नहीं कहते। उन्हें संन्यासी बनाकर भारत भेज दिया गया। फ़ादर बुल्के ने पहले दो साल 'जिसेट संघ' में पादरियों के बीच धर्माचार की पढ़ाई की। फिर 9-10 वर्ष दार्जिलिंग में पढ़ते रहे। उन्होंने कोलकाता से बी.ए. तथा इलाहाबाद से एम.ए. हिंदी में किया। उन्होंने इलाहाबाद के विद्वान् डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के निर्देशन में 'रामकथा : उत्पत्ति और विकास' विषय पर शोध-प्रबंध प्रस्तुत किया। उन्होंने 'ब्लू बर्ड' नामक नाटक का रूपांतर 'नील पंछी' के नाम से किया। इसके बाद वे राँची के सेंट जेवियर्स कॉलेज में हिंदी और संस्कृत विभाग के अध्यक्ष हो गए। यहीं उन्होंने प्रसिद्ध अंग्रेजी-हिन्दी कोश तैयार किया और बाइबिल का अनुवाद भी किया। 73 वर्ष की आयु में उनका देहान्त हो गया।

फ़ादर बुल्के संन्यासी ज़रूर थे, लेकिन रिश्ते बनाकर तोड़ते नहीं थे। दसियों साल बाद मिलने पर भी उनकी गंध महसूस होती थी। वे दिल्ली आने पर लेखक से अवश्य मिलते थे। वे हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए बहुत व्यग्र रहते थे। इसके लिए वे मंचों पर अकाट्य तर्क देते थे। वे हिंदी वालों को ही हिंदी की उपेक्षा करते देखकर झुँझलाते थे।

फ़ादर बुल्के हर दु:ख में साथ खड़े होते थे। उनके मुख से निकले सांत्वना के शब्द मन में गहरी शांति प्रदान करते थे। लेखक को अपनी पत्नी और पुत्र की मृत्यु याद है।

लेखक ने फ़ादर को अन्तिम बार देखा तो वे ताबूत में थे। उनके चेहरे पर बिखरी शांति स्थिर हो गई थी। 18 अगस्त, 1982 को सुबह दस बजे उनके शव को दिल्ली के कश्मीरी गेट स्थित निकलसन कब्रगाह में उतारा गया। कुछ पादरी, डॉ. रघुवंश का बेटा और उनके परिजन उन्हें धरती की गोद में सुलाने के लिए ले चले। जैनेंद्र, विजयेंद्र स्नातक, अजित कुमार, निर्मला जैन, मसीही समुदाय के लोग, डॉ. सत्यप्रकाश, डॉ. रघुवंश भी मौन उदासी में घिरे खड़े थे। मसीही विधि से अन्तिम संस्कार शुरू हुआ। राँची के फ़ादर पास्कल तोयना ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा, "फ़ादर बुल्के धरती में जा रहे हैं। इस धरती से ऐसे रत्न और पैदा हों।" डॉ. सत्यप्रकाश ने भी उन्हें नमन किया और देह कब्र में उतार दी गई । वहाँ उपस्थित सब लोग रो पड़े। फ़ादर बुल्के फल-फूल-भरे छायादार पेड़ की भाँति थे। उनका व्यक्तित्त्व दिव्य करुणा की चमक से लहलहाता था। आज भी उनकी याद यज्ञ की पवित्र आग की तरह महसूस होती है।

शब्दार्थ

जहरबाद—गैंग्रीन, एक तरह का जहरीला और कष्टसाध्य फोड़ा; **आस्था**—विश्वास, श्रद्धा; **देहरी**—दहलीज; **पादरी**—ईसाई धर्म का पुरोहित या आचार्य; **आतुर**—अधीर; **निर्लिप्त**—आसक्ति रहित; **आवेश**—जोश; **लबालब**—भरा हुआ; **धर्माचार**—धर्म का पालन या आचरण; **रूपांतर**—किसी वस्तु का बदला हुआ रूप; **अकाट्य**—जो कट न सके; **विरल**—कम मिलने वाली; **ताबूत**—शव या मुर्दा ले जाने वाला संदूक या बक्सा; **करील**—झाड़ी के रूप में उगने वाला एक कँटीला और बिना पत्ते का पौधा; **गैरिक वसन**—साधुओं द्वारा धारण किए जाने वाले गेरुए वस्त्र; **श्रद्धानत**—प्रेम और भक्ति युक्त पूज्यभाव; **कोश**—खजाना या शब्दकोश; **लगाव**—अधिक प्रेम; **दिव्य**—अलौकिक; **अस्तित्व**—विद्यमान होना; **यातना**—पीड़ा; **साक्षी**—गवाह; **छलकता**—उमड़ता।

❑❑

(काव्य-खंड)

अध्याय — 1 उत्साह, अट नहीं रही है *(सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला')*

कवि-परिचय

जीवन-परिचय—छायावाद के प्रमुख आधार-स्तम्भ सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1899 में बंगाल के महिषादल में हुआ। वे मूलत: गढ़ाकोला (जिला उन्नाव) उ. प्र. के निवासी थे। इनके पिता रामसहाय त्रिपाठी महिषादल रियासत में कोषाध्यक्ष के पद पर तैनात थे। निराला ने कक्षा नौवीं तक की पढ़ाई महिषादल में ही की। इनका पारिवारिक जीवन दु:खों व संघर्षों से भरा था। रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद की विचारधारा ने उन पर विशेष प्रभाव डाला। सन् 1961 में इनका देहांत हो गया।

प्रमुख रचनाएँ—अनामिका, परिमल, गीतिका, कुकरमुत्ता, बेला, अणिमा, अपरा, नए पत्ते आदि उनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं। निराला रचनावली के आठ खंडों में उनका सम्पूर्ण साहित्य प्रकाशित है। निरुपमा, अलका, अप्सरा, प्रभावती आपके प्रमुख उपन्यास हैं।

भाषा-शैली—निराला जी विस्तृत सरोकारों के कवि हैं। उनके विद्रोही स्वभाव ने कविता के जगत में नए प्रयोगों की शुरुआत की। उन्होंने कविता को छंद-बंधन से मुक्त कर मुक्त छंद का प्रयोग किया। उनकी कविता में परिमार्जित तत्सम शब्दों के साथ- साथ बोलचाल की भाषा का भी प्रयोग हुआ।

कविता का सार

उत्साह—उत्साह एक आह्वान गीत है जिसके माध्यम से कवि ने बादल को सम्बोधित किया है। कविता में बादल एक तरफ पीड़ित-प्यासे जन की अभिलाषा को पूरा करने वाला है, तो दूसरी तरफ बादल नयी कल्पना और नए अंकुर के लिए विप्लव, विध्वंस और क्रांति चेतना उत्पन्न करने वाला भी है। कविता में ललित कल्पना और क्रांति-चेतना दोनों हैं। कवि निराला जी ने बादल के माध्यम से मानव को प्रोत्साहित किया है।

अट नहीं रही है—इस कविता में फाल्गुन मास की सुन्दरता का मोहक वर्णन किया गया है। फाल्गुन मास की शोभा इतनी अधिक है कि इस सुंदरता से आँखें नहीं हट पा रही हैं। कहीं शीतल, मंद हवाएँ चल रही हैं, कहीं आकाश में पक्षी उड़ रहे हैं, कहीं वृक्षों व पौधों पर नए पत्ते व फूल खिले हैं। फाल्गुन मास की शोभा इतनी अधिक है कि वह संसार में समा नहीं पा रही है।

शब्दार्थ

धाराधर—बादल; **उन्मन**—अनमना; **निदाघ**—गर्मी; **सकल**—सारे; **आभा**—चमक; **वज्र**—कठोर इन्द्र का आयुध, **घोर**—भीषण; **पट नहीं रही**—समा नहीं रही है; **ललित**—सुंदर; **नूतन**—नई; **उर**—हृदय; **विकल**—परेशान; **अनंत**—जिसका अंत न हो, आकाश; **शीतल**—ठंडा; **अटना**—समाना; **पाट-पाट**—जगह-जगह; **शोभा-श्री**—सौंदर्य से भरपूर।

❑❑

अध्याय — 2 कन्यादान *(ऋतुराज)*

कवि–परिचय

जीवन–परिचय : अपने काव्य के माध्यम से समाज की विषमताओं को उजागर करने वाले कवि श्री ऋतुराज का जन्म सन् 1940 में भरतपुर (राजस्थान) में हुआ। इन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से अंग्रेजी विषय में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। चालीस वर्षों तक अंग्रेजी साहित्य के अध्यापन के बाद अब सेवानिवृत्ति लेकर ये जयपुर में रहते हुए हिंदी साहित्य के कोष में वृद्धि कर रहे हैं। इन्हें सोमदत्त तथा बिहारी पुरस्कारों से सम्मानित भी किया जा चुका है।

कृतियाँ : एक मरण धर्मा और अन्य, कितना थोड़ा वक्त, राजधानी में, अबेकस, पुल और पानी, सुरत निरत तथा लीला मुखारविन्द आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

भाषा–शैली : कवि ऋतुराज को अंग्रेजी व हिंदी दोनों भाषाओं पर समान अधिकार प्राप्त है। दैनिक जीवन के शब्दों का प्रयोग करने के कारण इनकी भाषा बहुत सरल है। कवि सरल भाषा में भी गंभीर भावों को प्रकट करने में समर्थ हैं।

कविता का सार

'कन्यादान' कविता में एक माँ के माध्यम से कवि ने स्त्रियों को अपने परंपरागत 'आदर्शों' से हटकर जीवन जीने की सीख दी है।

माँ अपनी बेटी को उसके विवाह के समय सीख देते हुए सावधान कर रही है। उसकी इस सीख में उसकी अंतर्वेदना छिपी हुई है। पुत्री के विवाह के समय माँ को होने वाली पीड़ा को समझने के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। यह एक स्वाभाविक पीड़ा है। एक माँ के लिए उसकी बेटी ही उसकी अंतिम पूँजी है और उसे भी वह दान में दे रही है। माँ के अनुसार, उसकी बेटी अभी सयानी नहीं हुई है। विवाह के बाद होने वाली समस्याओं से वह अनजान है, वह बहुत भोली और सरल है। वह सुख की कल्पनाएँ तो कर पाती है लेकिन दु:ख को समझना नहीं जानती है। वह वैवाहिक जीवन के सुख–दु:ख से अनजान है।

वह उसे समझाते हुए पानी में अपने सौन्दर्य को देखकर अधिक प्रसन्न न होने के लिए कह रही है साथ ही वह उसे आग से सावधान करते हुए कह रही है कि आग खाना बनाने के लिए है जलने के लिए नहीं। वस्त्र और आभूषण शब्दों के भ्रमजाल के समान हैं, अत: उनके लालच में मत पड़ना। ये सब केवल बंधनों में बाँधते हैं। वह उसे समझाती है कि वह लड़की की मर्यादा में तो रहे परंतु इतनी भी भोली न रहे कि लोग उसका ग़लत फ़ायदा उठा पाएं। हर तरह से सावधान और सजग रहे। जीवन की प्रत्येक परिस्थिति का धैर्य के साथ सामना करे।

शब्दार्थ

प्रामाणिक—सत्यापित, यथार्थ। **वक्त**—समय। **अंतिम**—आखिरी। **पूँजी**—संपत्ति। **सयानी**—समझदार। **आभास होना**—महसूस होना। **बाँचना**—समझना। **पाठिका**—पढ़ने वाली। **रीझना**—मोहित होना। **भ्रम**—धोखा।

❑❑

कृतिका (भाग–2)

अध्याय — 1 माता का अँचल *(शिवपूजन सहाय)*

लेखक–परिचय

जीवन–परिचय—शिवपूजन सहाय का जन्म बिहार के भोजपुर जिले के गाँव उनवास में सन् 1893 में हुआ था। इनका बचपन का नाम भोलानाथ था। ये दसवीं परीक्षा पास करने के बाद बनारस की कचहरी में नकलनवीस की नौकरी करने लगे थे। इस नौकरी को छोड़ने के बाद ये हिंदी के अध्यापक बने। कुछ समय के बाद नौकरी से त्यागपत्र देकर असहयोग आंदोलन में शमिल हो गए। इन्होंने जागरण, हिमालय, माधुरी तथा बालक आदि अनेक पत्रिकाओं का संपादन किया। इसके अतिरिक्त ये हिंदी की प्रतिष्ठित पत्रिका मतवाला के संपादक–मण्डल में भी शामिल थे। सन् 1963 में इनका देहांत हो गया।

प्रमुख रचनाएँ—शिवपूजन सहाय मुख्य रूप से एक गद्य लेखक थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

देहाती दुनिया, ग्राम सुधार, वे दिन वे लोग और स्मृतिशेष आदि। इनकी सभी रचनाएँ शिवपूजन सहाय रचनावली के नाम से चार खण्डों में प्रकाशित हुई हैं।

भाषा-शैली—इन्होंने उर्दू तथा अंग्रेजी सभी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है। इनकी भाषा सहज, सरल तथा बोधगम्य है। इन्होंने बिम्बों व प्रतीकों का भी प्रयोग किया है।

पाठ का सारांश

'माता का अँचल' में ग्रामीण जीवन की कहानी सरल, सहज भाषा में कही गई है। कहानी में देशज शब्दों का प्रयोग बहुलता से किया गया है।

पिता से लगाव—बचपन में लेखक का अपने पिता से अधिक लगाव था। वह पिता के साथ ही सोता, उठता-बैठता तथा खाता-पीता था। पिता उसे अपने साथ ही जगाते और नहला-धुलाकर अपने साथ ही पूजा पर बिठा लेते थे। पिता की देखा-देखी वह भी हठ करके अपने माथे पर भभूत का त्रिपुंड लगवा लेता था। लम्बे बालों और मस्तक पर लगे त्रिपुंड से लेखक 'बम भोला' जैसा लगता था। लेखक का नाम तो 'तारकेश्वरनाथ' था, लेकिन पिता प्यार से उसे 'भोलानाथ' कहकर बुलाते थे। जब उसके पिता रामायण का पाठ करते तो वह दर्पण में अपना मुँह देखा करता और पिता की दृष्टि पड़ने पर लजाकर और मुस्कराकर दर्पण रख देता था। पूजा के बाद पिता अपनी 'रामनामा' बही, पर एक हजार बार रामनाम लिखते। इसके बाद कागज़ के छोटे-छोटे टुकड़ों पर पाँच सौ बार राम-नाम लिखकर आटे की गोलियों में लपेट देते और गंगा नदी के किनारे जाकर उन गोलियों को मछलियों को खिलाते थे। लेखक उनके कंधे पर बैठे-बैठे यह सब देखता था। लौटते समय पिता उसे पेड़ों की डालियों पर बिठाकर झूला झुलाते थे।

पिता के साथ खेल—भोलानाथ के पिता उसके साथ अनेक प्रकार से खेल-खेलते थे। कभी उससे कुश्ती लड़ते और जानबूझकर हार जाते। लेखक उनकी छाती पर चढ़कर उनकी लम्बी-लम्बी मूँछें उखाड़ने लगता। कभी वे लेखक के गालों पर खट्टा-मीठा चुम्मा लेते। कभी अपनी दाढ़ी-मूँछ लेखक के गालों पर गढ़ा देते और उसके द्वारा मूँछें नोंचे जाने पर झूठ-मूठ रोने लगते। यह देखकर लेखक हँसने लगता।

भोजन के समय माता-पिता का लाड़—भोलानाथ (लेखक) पिता के साथ ही भोजन करता था। पिता उसे दूध या दही के साथ भात खिलाते थे। पेट भर जाने पर भी माँ उसे अपने हाथ से खिलाने का हठ करती थीं। वह भोलानाथ के पिता से कहतीं कि मर्द बच्चों को खिलाना नहीं जानते। बच्चों का पेट तो माँ के खिलाने पर ही भरता है। इसके बाद वह हर कौर को मैना, कबूतर आदि पक्षियों का नाम देकर खिलाने लगतीं और भोलानाथ खाता चला जाता।

माता द्वारा तेल का उबटन व 'कन्हैया' बनाना—जब भोलानाथ माँ की पकड़ में आ जाता तो माँ उनके बालों में बहुत-सा सरसों का तेल डाल देतीं। भोलानाथ छूटने के लिए काफी छटपटाता लेकिन माँ उसकी नाभि और माथे पर काजल की बिन्दी लगाकर,चोटी गूँथकर और उसमें फूलदार लट्टू बाँधकर रंगीन कुरता-टोपी पहनाकर कन्हैया बनाकर ही छोड़तीं। भोलानाथ सिसकते हुए पिता की गोद में बाहर आते।

अनेक प्रकार के खेल—बाहर आते ही भोलानाथ को अपने संगी-साथी बालकों का झुंड खड़ा मिलता। उन्हें देखते ही वह पिता की गोद से उतरकर बालकों के साथ खेल में लग जाता। उनके खेल, तमाशे या नाटक जैसे होते थे। कभी घर के चबूतरे के एक कोने में पिता के नहाने की चौकी पर हलवाई की दुकान सजाई जाती थी। मिट्टी के ढेलों, पत्तियों, गीली मिट्टी और फूटे घड़े के टुकड़ों से तरह-तरह की मिठाइयाँ सजाई जाती थीं।

थोड़ी देर के बाद घरौंदा बनने लगता। मिट्टी की मेंड़ से दीवार, तिनकों से छप्पर, दाँतुन से खम्भे और दियासिलाई की डिब्बियों से किवाड़ बनाए जाते। घड़े के मुँह से चूल्हा-चक्की, दीए से कढ़ाई, पिता की आचमनी की कलछी बनती। पानी को घी, धूल को आटा और बालू को चीनी मानकर दावत की तैयारी होने लगती। तब लेखक के पिता भी चुपचाप आकर पंगत में बैठ जाते। उन्हें देखते ही सब बालक हँसते हुए वहाँ से भाग जाते।

कभी सब बालक मिलकर बारात निकालते थे। बारात में कनस्तर का तंबूरा बजता और आम की गुठली को घिसकर उससे शहनाई बजाई जाती थी। टूटी चूहेदानी की पालकी बनती और भोलानाथ समधी बनकर बकरे पर सवार होकर लड़की वाले के द्वार पर जा पहुँचता। वहाँ काठ की पटरियों से घिरे छोटे से आँगन में कुल्हड़ का कलसा रखा होता था फिर बारात दुल्हन के साथ वापस लौटती। खटोली पर लाल परदा डालकर उसमें दुल्हन बैठ जाती। लौटकर आने पर भोलानाथ के पिता जैसे ही लाल परदा हटाकर दुल्हन का मुँह निहारते, सारे बालक वहाँ से हँसते हुए भाग जाते।

कभी खेती करने का खेल होता तब चबूतरा ही खेत बन जाता। उसके कोने पर गरारी गाढ़कर और गली को कुआँ मानकर सिंचाई की जुगाड़ की जाती। दो बच्चे बैल बनकर मोट को खींचते। कंकड़ों के बीज बोए जाते। जरा देर में फ़सल तैयार होकर कट जाती और बच्चे गाने लगते—ऊँच नीच में बई कियारी, जो उपजी सो भई हमारी।

जब फसल का ढेर लगता तो बाबूजी आकर पूछते, इस साल की खेती कैसी रही भोलानाथ? बस, सारे बच्चे खेत-खलिहान छोड़ हँसते हुए भाग जाते थे।

इसी प्रकार के खेल लेखक और उनकी मित्र मण्डली खेला करती थी।

शरारत और सजा—बच्चों को शरारत करने और लोगों को चिढ़ाने में भी बड़ा मजा आता था। एक बार बहू को विदा कराकर ला रहे एक बूढ़े वर को लड़कों ने यह कहकर चिढ़ाया—'रहरी में रहरी पुरान रहरी, डोला के कनिया हमार मेहरी।'

बूढ़े ने ढेले मार-मारकर बच्चों को दूर तक खदेड़ा। एक दिन सभी बच्चे बाग में आम खाने गए। इसी समय बड़े ज़ोर की बारिश होने लगी। बच्चों ने किसी तरह पेड़ों से चिपककर जान बचाई। वर्षा थमने पर बाग मे बहुत से बिच्छू रेंगते दिखाई दिए। यह देख सभी बच्चे भागे। रास्ते में उनको एक बूढ़े व्यक्ति मूसन तिवारी मिल गए। उन्हें कम दिखता था। बैजू नाम के लड़के ने उन्हें चिढ़ाने को कहा—'बुढ़वा बेईमान माँगे करैला का चोखा'।

मूसन तिवारी भड़क उठे और उन्होंने बच्चों को बुरी तरह खदेड़ा। मूसन तिवारी वहाँ से पाठशाला जा पहुँचे और गुरुजी से बैजू और भोलानाथ की शिकायत की। गुरुजी ने चार लड़कों को बैजू और भोलानाथ को पकड़कर लाने का आदेश दिया। बैजू तो हाथ न आया लेकिन भोलानाथ को पकड़कर गुरुजी के आगे पेश किया गया। गुरुजी ने भोलानाथ की अच्छी तरह खबर ली। पिता को पता चला तो गुरुजी की खुशामद करके भोलानाथ को छुड़ाकर घर लाए।

साँप से भयभीत होना—एक बार एक टीले पर जाकर बच्चों ने चूहों के बिलों में पानी उलीचना शुरू कर दिया। इसी बीच एक बिल में से एक साँप निकल आया। साँप को देखते ही सारे बच्चे डर के मारे रोते-चिल्लाते भागे। कोई औंधा गिरा तो कोई चित, किसी का सिर फूटा तो किसी के दाँत टूटे।

माँ की गोद में जा छिपना—भोलानाथ भागता हुआ घर में घुसा और सीधे माँ की गोद में जा छिपा। माँ उसकी दशा देखकर व्याकुल हो गईं। डर के मारे भोलानाथ के मुँह से आवाज़ भी नहीं निकल रही थी। वह 'साँ-स-साँ' ही कह पा रहा था। बाबूजी भी दौड़कर पहुँचे और भोलानाथ को गोद में लेना चाहा लेकिन भोलानाथ माँ का अँचल छोड़कर जाने को तैयार नहीं हुआ।

शब्दार्थ

मृदंग—एक तरह का वाद्य यंत्र; **तड़के**—प्रभात, सवेरा; **लिलार**—ललाट; **त्रिपुंड**—माथे पर लगाये जाने वाला आड़ी या अद्‌र्ध चंद्रकार रेखाओं का तिलक; **आइना**—दर्पण; **उतान**—पीठ के बल लेटना। **ठौर**—स्थान; **सानकर**—मिलाकर, लपेटकर, गूँथकर। **अफर**—भर-पेट से अधिक खा लेना; **महतारी**—माता; **कड़वा तेल**—सरसों का तेल; **बोथकर**—सराबोर कर देना; **चँदोआ**—छोटा शामियाना; **ज्योनार**—भोज, दावत; **जीमना**—भोजन करना; **अमोले**—आम का उगता हुआ पौधा; **ओहार**—पर्दे के लिए डाला कपड़ा; **कसोरे**—मिट्टी का बना छिछला कटोरा। **रहरी**—अरहर; **अँठई**-कुत्ते के शरीर में चिपके रहने वाले छोटे कीड़े, किलनी। **चिरौरी**—दीनतापूर्वक की जाने वाली प्रार्थना, विनती। **ओसारा**—बरामदा; **अमनिया**—साफ, शुद्ध।

❑❑

अध्याय — 2 जॉर्ज पंचम की नाक *(कमलेश्वर)*

लेखक–परिचय

जीवन-परिचय—प्रसिद्ध रचनाकार कमलेश्वर जी का जन्म उत्तर प्रदेश के मैनपुरी कस्बे में 6 जनवरी सन् 1932 में हुआ। इनके पिता बचपन में ही इन्हें अकेला छोड़कर स्वर्ग सिधार गए थे। हाईस्कूल तक की शिक्षा इन्होंने मैनपुरी में ही प्राप्त की। इसके बाद प्रयाग विश्वविद्यालय से हिंदी में एम. ए. किया और पत्रकारिता से जुड़ गए। इन्होंने सारिका, नई कहानी, दैनिक जागरण तथा दैनिक भास्कर आदि पत्र-पत्रिकाओं का संपादन बड़ी कुशलता से किया है। ये आकाशवाणी तथा दूरदर्शन की परिचर्चाओं में भी भाग लेते थे। कुछ वर्षों तक मुम्बई की फिल्मी दुनिया में भी रहे और अनेक फिल्मों तथा धारावाहिकों की पटकथा एवं संवाद लिखे। 27 जनवरी सन् 2007 को दिल का दौरा पड़ने से इनका निधन हो गया।

रचनाएँ—कमलेश्वर ने अनेक प्रकार की रचनाएँ की हैं। जैसे- कहानी-संग्रह, उपन्यास, नाटक, यात्रा वृत्तान्त, संस्मरण एवं समीक्षा ग्रन्थ आदि। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

कहानी संग्रह—राजा निरबंसियाँ, कस्बे का आदमी, माँस का दरिया, ब्यान, खोई हुई दिशाएँ, तलाश, जिन्दा मुर्दे, आँधी, दुनिया और मेरी प्रिय कहानियाँ आदि।

उपन्यास—काली आँधी, समुद्र में खोया हुआ आदमी, एक सड़क सत्तावन गलियाँ, सुबह-दोपहर-शाम, डाक बंगला, काली आँधी, वही बात, आगामी अतीत और कितने पाकिस्तान आदि।

नाटक—चारुलता, अधूरी आवाज आदि।

यात्रा वृत्तांत—खण्डित यात्राएँ, संस्मरण अपनी निगाह में।

समीक्षा— नई कहानी की भूमिका, समान्तर सोच और मेरा पन्ना आदि।

भाषा-शैली—कमलेश्वर की भाषा में उर्दू, अंग्रेजी एवं आंचलिक शब्दों का प्रयोग हुआ है। मुहावरों के सुन्दर प्रयोग से भाषा में प्रवाहमयता आ गई है। इनकी कहानियों में वर्णनात्मक तथा आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

पाठ का सारांश

इंग्लैण्ड की रानी एलिजाबेथ का भारत आना—इंग्लैण्ड की महारानी एलिजाबेथ अपने पति के साथ भारत आ रही थीं। भारत के अखबारों में उनके कीमती सूट, नौकरों, बावर्चियों, खानसामों, अंगरक्षकों यहाँ तक कि उनके पालतू कुत्तों के समाचार और चित्र छापे जा रहे थे। रानी के आगमन से सारे देश में सनसनी मची हुई थी। भारत सरकार के अधिकारी रानी का धूमधाम से स्वागत करने को बेचैन थे। थोड़े ही समय में नई दिल्ली की कायापलट हो गयी। वहाँ की सड़कें और इमारतें नई-नवेली दुल्हन की तरह सज-धज गईं।

जॉर्ज पंचम की नाक-रहित मूर्ति : एक समस्या—नई दिल्ली में अन्य सारे प्रबन्ध हो रहे थे, लेकिन एक विकट समस्या खड़ी हो गई। इंडिया गेट के सामने स्थित जॉर्ज पंचम की मूर्ति की नाक नहीं थी। इस नाक को लेकर पहले बड़े आंदोलन और बहसें हुई थीं। नाक रहे या हटा दी जाए, इस प्रश्न को लेकर खूब बहसें हुईं लेकिन कोई हल नहीं निकला। नाक को बचाने के लिए हथियारबंद पहरेदार नियुक्त किए गए। भारत में जगह-जगह ऐसी मूर्तियाँ लगी थीं जिनको लोगों ने नाकविहीन कर दिया, उन्हें संग्रहालयों में पहुँचा दिया गया। जॉर्ज पंचम की मूर्ति की नाक भी एक दिन गायब हो गई। इंग्लैण्ड की रानी पधारे और इंग्लैण्ड के राजा की नकटी मूर्ति खड़ी रहे, यह बड़ी परेशानी का कारण बन गया। देश के हितैषी कहे जाने वाले लोगों ने जॉर्ज पंचम की नाक को अपनी नाक का सवाल बना लिया।

नाक लगवाने के प्रयास—नाक को फिर से लगवाने के लिए सरकार के उच्च अधिकारियों ने प्रयास आरम्भ कर दिए। एक मूर्तिकार को बुलवाया गया। उसे आदेश दिया गया कि जॉर्ज पंचम की मूर्ति की नाक लगानी है। मूर्तिकार ने कहा कि नाक तो लग जाएगी लेकिन यह पता चलना चाहिए कि इस मूर्ति के लिए पत्थर कहाँ से लाया गया था? परेशान अधिकारियों ने पुरातत्व विभाग से जानकारी माँगी लेकिन उनकी फाइलों में कुछ नहीं मिला। अंत में एक कमेटी बनाई गई और उसे हर हाल में इस काम को कराने की जिम्मेदारी सौंपी गई।

मूर्तिकार द्वारा पत्थर की खोज—मूर्तिकार ने स्वयं नाक के लिए सही पत्थर की खोज करने का वचन दिया। कमेटी के सभापति ने खुश होकर भाषण दे डाला कि भारत में हर चीज मिल सकती है। खोज और मेहनत करने की जरूरत है। इस मेहनत के फलस्वरूप आने वाले समय में देश खुशहाल होगा। यह भाषण अखबारों में छप गया। मूर्तिकार ने भारत के सभी पहाड़ी प्रदेशों और पत्थर की खानों पर जाकर सही पत्थर की खोज की लेकिन कहीं भी मूर्ति वाला पत्थर नहीं मिला। उसने लौटकर कहा कि मूर्ति में प्रयोग किया गया पत्थर विदेशी था। यह सुनकर सभापति को क्रोध आ गया और वह मूर्तिकार को धिक्कारते हुए कहने लगा कि जब भारत में सारी विदेशी वस्तुएँ, यहाँ तक कि विदेशी दिल-दिमाग और रहन-सहन भी मौजूद हैं तो विदेशी पत्थर जैसी मामूली चीज क्यों नहीं मिल सकती।

मूर्तिकार का नया सुझाव—सभी को बेहद परेशान देखकर मूर्तिकार ने एक नया सुझाव पेश किया। उसने शर्त रखी कि यह बात अखबारों तक नहीं पहुँचनी चाहिए, कमरे के दरवाजे बन्द कर दिए गए। मूर्तिकार ने सुझाव दिया कि देश में अनेक नेताओं की मूर्तियाँ हैं अगर ठीक समझें तो उनमें से सही नाक उतार ली जाए। कुछ असमंजस के बाद मूर्तिकार को यह काम बड़ी होशियारी से करने की इजाज़त दे दी गई।

मूर्तिकार का सारे देश में भ्रमण—जॉर्ज पंचम की नाक का नाप लेकर मूर्तिकार चल पड़ा। उसने मुम्बई में दादा भाई नौरोजी, गोखले, तिलक, शिवाजी, कॉवसजी जहाँगीर आदि की नाकों को जाँचा। सफलता न मिलने पर वह गुजरात जा पहुँचा। वहाँ गांधीजी, सरदार पटेल, महादेव देसाई आदि की मूर्तियाँ परखीं, वहाँ से बंगाल, बिहार, मद्रास, पंजाब, उत्तर प्रदेश सभी प्रदेशों में भागता फिरा लेकिन कहीं सफलता नहीं मिली। इन सभी नेताओं और महापुरुषों की नाकें जॉर्ज पंचम की नाक से बड़ी निकलीं। मूर्तिकार हताश होकर दिल्ली लौट आया।

मूर्तिकार द्वारा जिंदा नाक लगाने का सुझाव—स्वागत की तैयारियाँ चल रहीं थीं। जॉर्ज पंचम की मूर्ति को रगड़-रगड़कर साफ किया गया लेकिन नाक न होना सभी अधिकारियों को परेशान कर रहा था। बड़े अधिकारियों तक बात पहुँची तो खलबली मच गई। मूर्तिकार के दिमाग में एक आश्चर्यजनक विचार आया। उसने बंद कमरे में सुझाव रखा कि भारत के चालीस करोड़ लोगों में से किसी एक की नाक जॉर्ज पंचम की मूर्ति पर लगा दी जाए, कमेटी में सन्नाटा छा गया। मूर्तिकार ने कहा कि नाक लाने की जिम्मेदारी उसकी, केवल उसे इस काम की अनुमति दे दी जाए। मूर्तिकार को इजाज़त दे दी गई।

अंत में पहरेदारों की तैनाती में जॉर्ज पंचम के जिन्दा नाक लगा दी गई। सारे अखबारों में यह समाचार छपा कि जॉर्ज पंचम के जिन्दा नाक लगा दी गई यानि ऐसी नाक जो कतई पत्थर की नहीं लगती, लेकिन उस दिन अखबारों में किसी उद्घाटन सभा, अभिनंदन या स्वागत-समारोह का कोई समाचार नहीं छपा। सारे अखबार खाली थे।

शब्दार्थ

बेसाख्ता—स्वाभाविक रूप से; **ख़ानसामा**—भंडार या रसोई का प्रबंधक; **अचकचाना**—चौंकना; **कतई**—तनिक भी; **लानत**—धिक्कार; **बदहवास**—घबराए हुए; **ख़ता**—भूल; **ताका**—देखा; **रहमत**—दया; **नाजनीन**—कोमल स्त्री; **मज़ाल**—साहस; **अजायबघर**—पुरानी चीजों के संग्रह का स्थान; **लाट**—मूर्ति; **कारनामा**—महत्त्वपूर्ण कार्य; **सनसनी**—खलबली; **पधारना**—आना।

❑❑

अध्याय — 3 साना–साना हाथ जोड़ि .... *(मधु कांकरिया)*

लेखिका–परिचय

जन्म–परिचय—लेखिका मधु कांकरिया का जन्म 23 मार्च 1957 को कोलकाता में हुआ। इन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. किया साथ ही कम्प्यूटर एप्लीकेशन में डिप्लोमा किया। मधु कांकरिया की रचनाओं में विचार और संवेदना की नवीनता मिलती है। समाज में व्याप्त अनेक ज्वलंत समस्याएँ इनकी रचनाओं के विषय रहे हैं।

रचनाएँ—पत्ताखोर, सलाम आखिरी, खुले गगन के लाल सितारे, बीतते हुए, अंत में ईशु, व अनेक यात्रा वृतांत जैसे—साना–साना हाथ जोड़ि।

भाषा–शैली—इनकी भाषा बहुत प्रौढ़ तथा सहज है। शब्द विन्यास सटीक है। अधिकतर वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है।

पाठ का सारांश

यात्रा की प्रेरणा—महानगरों व नगरों की भावशून्यता, भागमभाग और यंत्रवत जीवन पद्धति की ऊब लेखिका को दूर–दूर की यात्राओं को करने के लिए प्रेरित करती है। मधु जी ने उन्हीं यात्राओं के अनुभवों को अपने इस यात्रा–वृत्तांत में शब्दबद्ध किया है। उन्होंने 'साना–साना हाथ जोड़ि·····' यात्रा वृत्तान्त में पूर्वोत्तर भारत के सिक्किम राज्य की राजधानी गंगटोक, हिमालय की यात्रा व उसके अनंत सौंदर्य का काव्यात्मक वर्णन किया है।

गंगटोक—लेखिका ने गंगटोक को इतिहास और वर्तमान के संधि:स्थल पर खड़ा, मेहनती बादशाहों का शहर माना है, क्योंकि वहाँ के सभी लोग बड़े ही मेहनती हैं। इसलिए उस शहर का सब कुछ सुन्दर था, उसकी सुबह भी सुन्दर थी और शाम भी। खासकर लेखिका को गंगटोक की रहस्यमयी सितारों भरी रात ने सम्मोहित किया। वहीं पर उन्होंने एक नेपाली युवती से उन्हीं की भाषा में प्रार्थना के बोल सीखे, जो इस प्रकार हैं—"साना–साना हाथ जोड़ि, गर्दह प्रार्थना। हाम्रो जीवन तिम्रो कौसली" जिसका अर्थ है—छोटे–छोटे से हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रही हूँ कि मेरा सारा जीवन अच्छाइयों को समर्पित हो।

बौद्ध धर्म—गंगटोक से यूमथांग को निकलते ही लेखिका को एक कतार में लगी सफेद–सफेद बौद्ध पताकाएँ दिखाई दीं जो ध्वज की तरह फहरा रही थीं। ये शान्ति और अहिंसा की प्रतीक थीं, इन पताकाओं पर मंत्र लिखे हुए थे।

लेखिका के गाइड ने उन्हें बताया कि जब किसी बौद्ध मतावलम्बी की मृत्यु होती है, तो उसकी आत्मा की शांति के लिए शहर से दूर किसी भी पवित्र स्थान पर एक सौ आठ श्वेत पताकाएँ फहरा दी जाती हैं। इन्हें उतारा नहीं जाता है। कई बार नए शुभ कार्य की शुरुआत में भी रंगीन पताकाएँ फहरा दी जाती हैं।

आगे चलकर मधु जी को एक कुटिया के भीतर घूमता हुआ चक्र दिखाई दिया जिसे धर्म चक्र या प्रेयर व्हील कहा जाता था। नार्गे ने बताया कि इसे घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं। लेखिका ने महसूस किया कि मैदान हो या पहाड़, तमाम वैज्ञानिक प्रगतियों के बावजूद इस देश की आत्मा एक जैसी है।

हिमालय का अनन्त सौन्दर्य—लेखिका किसी से बातचीत किए बिना ही हिमालय के अद्‌भुत सौन्दर्य को अपने भीतर समेट लेना चाहती थीं। तभी उन्होंने खूब ऊँचाई से पूरे वेग के साथ सर्वोच्च शिखर से गिरता, फेन उगलता झरना देखा जिसका नाम था—'सेवन सिस्टर्स वाटर फॉल।' लेखिका ने जैसे ही उस झरने की जलधारा में पाँव डुबोया उनका मन काव्यमय हो उठा, उन्हें ऐसा लगा जैसे उनके अन्दर की तामसिकताएँ और दुष्ट वासनाएँ जल की निर्मल धारा में बह गईं। आगे बढ़ने पर उन्होंने पल–पल परिवर्तित होते हिमालय के सौंदर्य को देखा जहाँ सभी ओर जन्नत बिखरी पड़ी थी। पल भर में ही ब्रह्माण्ड में इतना सब कुछ घटित हो रहा था·····निरन्तर प्रवाहमान झरने, वेग से बहती तिस्ता नदी, सामने उठती धुँध, आवारा बादल, झूमते हुए प्रियुता और रूडो डेंड्रों के फूल सभी अपनी लय, तान और प्रवाह में नृत्य करते हुए प्रतीत हो रहे थे। हिमालय अब लेखिका के लिए कविता नहीं दर्शन बन गया था।

कटाओ की यात्रा—लेखिका बर्फ देखने के लिए बेचैन थी, तभी उन्हें किसी सिक्कमी युवक ने बताया कि अगर बर्फ देखनी है तो कटाओ जाना पड़ेगा। कटाओ को भारत का स्विट्जरलैंड कहते हैं। कटाओ पहुँचते ही बर्फ से ढके पहाड़ दिखाई देने लगे जो चाँदी की तरह

चमक रहे थे, उन पर बर्फ साबुन के झाग की तरह सब ओर गिरी हुई थी। सभी सैलानी जो लेखिका के साथ थे जीप से उतरकर बर्फ पर कूदने लगे, पर लेखिका सोच रही थी कि शायद ऐसी ही विभोर कर देने वाली दिव्यता के बीच हमारे ऋषि-मुनियों ने वेदों की रचना की होगी। जीवन के सत्यों को खोजा होगा, 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' का महामंत्र पाया होगा। हिमालय की सम्पूर्णता का प्रतीक सौंदर्य ऐसा ही था कि बड़े से बड़े अपराधी को भी करुणा का अवतार 'बुद्ध' बना दे।

पहाड़ी महिलाओं की श्रमशीलता—हिमालय की यात्रा के दौरान लेखिका ने पाया कि इतने स्वर्गीय सौन्दर्य, नदी, फूलों, वादियों और झरनों के बीच भूख, मौत, दैन्य और जिंदा रहने की इस जंग में पहाड़ी औरतों को हाथ में कुदाल और हथौड़ा लिए हुए पत्थर तोड़ते देखा। मेरे पूछने पर बोर्ड रोड ऑर्गनाइजेशन के एक कर्मचारी ने बताया कि जिन रास्तों से गुजरते हुए आप हिमशिखरों से टक्कर लेने जा रही हैं ये पहाड़िनें उन्हीं रास्तों को चौड़ा कर रही हैं। इनके हाथ में पड़े ठेक आम जिंदगी की कहानी कह रहे थे। ये कितना कम लेकर समाज को कितना अधिक वापस लौटा देती हैं। यहीं वेस्ट एट रिपेइंग है। ये पहाड़िनें घर का भी काम करती हैं और बाहर का भी। इनके कामों में गाय चराना, लकड़ियाँ काटकर उनके भारी भरकम गट्ठर को लाद कर ले जाना शामिल है।

फौजी छावनियाँ—लेखिका का सफर जब थोड़ा और आगे बढ़ा तो उन्हें वहाँ कुछ फौजी छावनियाँ दिखाई दीं, तभी उन्हें ध्यान आया कि यह बॉर्डर एरिया है थोड़ी ही दूर पर चीन की सीमा है। एक फौजी से मधु जी ने पूछा कि इतनी कड़कड़ाती ठंड में आपको बहुत तकलीफ होती होगी। उसने एक उदास हँसी हँसते हुए कहा—"आप चैन की नींद सो सकें, इसलिए तो हम यहाँ पहरा दे रहे हैं।"

लेखिका का मन उदास हो गया—वे सोचने लगीं कि वैशाख के महीने में इस बर्फीले स्थान पर हम पाँच मिनट में ही ठिठुरने लगेंगे। हमारे ये फौजी भाई पौष और माघ में भी तैनात रहते हैं, उस समय सिवाय पेट्रोल के सब कुछ जम जाता है, ऐसे समय में ये जवान हमारे देश की और हमारी सुरक्षा के लिए तैयार खड़े रहते हैं।

नार्गे एक कुशल गाइड—गंगटोक से लेकर हिमालय की यात्रा के दौरान नार्गे ने एक कुशल गाइड की तरह लेखिका और उनके साथियों का मार्ग निर्देशन किया। उसके अन्दर वे सभी खूबियाँ थीं जो एक कुशल गाइड के अन्दर होनी चाहिए, उसे गंगटोक से लेकर हिमालय तक की सभी ऐतिहासिक एवं भौगोलिक स्थिति का पूर्ण ज्ञान था। उसे कई तरह की भाषाओं का ज्ञान था। उसे अपने सैलानियों की रुचि का भी पूरा ध्यान रहता था।

शब्दार्थ

अतींद्रियता—इंद्रियों से परे; **उजास**—उजाला; **सम्मोहन**—मोहित होना; **कपाट**—दरवाजा; **अवधारणाएँ**—विचार; **रफ़्ता-रफ़्ता**—धीरे-धीरे; **ओझल**—दिखाई न देना; **वीरान**—सुनसान; **जल प्रपात**—झरना; **पराकाष्ठा**—चरमसीमा; **मशगूल**—व्यस्त; **अभिशप्त**—शापित; **शिद्दत**—बहुत अधिक इच्छा; **तामसिकता**—बुरी भावना, तमोगुण; **अनमनी**—उदास, बेमन से; **तंद्रिल अवस्था**—नींद की स्थिति; **सयानी**—समझदार; **चैरवेति-चैरवेति**—चलते रहो, चलते रहो; **वजूद**—अस्तित्व; **संजीदा**—गंभीर; **गमगीन**—दुखी; **वेस्ट एट रिपेईंग**—कम लेना और अधिक देना; **असह्य**—जो सहन न हो; **मद्धिम**—धीमे; **हलाहल**—विष; **राम रोछो**—अच्छा है; **ख़्वाहिश**—इच्छा; **ठगा-सा रह जाना**—आश्चर्य चकित होना; **लम्हा**—पल, क्षण; **मियाद**—अवधि, सीमा; **आबोहवा**—जलवायु; **विस्मय**—आश्चर्य; **रकम रकम**—तरह-तरह के; **मुंड़की**—सिर। **सरहद** — सीमा; **तामसिकताएँ** — तमोगुण से युक्त कुटिल; **दुष्ट वासनाएँ** — बुरी इच्छाएँ; **जन्नत** — स्वर्ग; **ठाठे** — हाथ में पड़ने वाले निशान या गाँठें; **वर्बीला** — बढ़े पेट वाला; **हलाहल** — जहर; **संक्रमण** — मलना;

❑❑

लेखन

अध्याय — 1 अनुच्छेद लेखन

स्मरणीय बिन्दु

अनुच्छेद लेखन एक कला है। किसी विषय से सम्बन्धित सभी महत्त्वपूर्ण बातों को निर्धारित शब्द सीमा में लिखने के लिए बड़े बुद्धि कौशल की आवश्यकता होती है। दिए गए विषय को ध्यान में रखकर अनुच्छेद लिखते समय निम्न बातों को ध्यान रखना आवश्यक है—

1. अनुच्छेद लेखन एक प्रकार की संक्षिप्त लेखन शैली है अत: मुख्य विषय पर ही ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

2. प्रश्न पत्र में दिए गए संकेत बिन्दुओं को ध्यानपूर्वक पढ़ना व समझना चाहिए।

3. अनुच्छेद लेखन में व्यर्थ की बातों का समावेश नहीं करना चाहिए अन्यथा उसका प्रभाव शिथिल हो जाता है।

4. अनुच्छेद लेखन में विषय को इस प्रकार समायोजित करना चाहिए कि उसकी शब्द सीमा 150 शब्दों के आस–पास ही रहे।

5. अनुच्छेद लेखन में अनुभूति की प्रधानता अपेक्षित है।

6. वाक्य छोटे और आपस में जुड़े होने चाहिए।

7. भाषा सरल और सार्थक होनी चाहिए।

❑❑

अध्याय — 2 पत्र लेखन

स्मरणीय बिंदु

हर्ष, शोक, सूचना, समाचार, प्रार्थना और स्वीकृति आदि के भावों को लेकर कागज़ पर लिखी किसी अधिकारी, स्वजन या सामान्य जन को सम्बोधित वाक्यावली को पत्र कहते हैं।

पत्र–लेखन एक आवश्यक कौशल है। अपने विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति के लिए पत्र–लेखन का प्रयोग किया जाता है। अपने सगे–संबंधियों, पदाधिकारियों, मित्रों, संपादकों आदि से लिखित भाव सम्प्रेषण के माध्यम से जुड़ने की कला पत्र लेखन कहलाती है। पत्र लेखन हमारे जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है, जो लोगों को समाज से जोड़कर रखता है। यद्यपि आज मोबाइल युग में पत्रों का आदान–प्रदान न के बराबर हो गया हैं किंतु फिर भी अनेक ऐसे कार्य हैं जो पत्राचार के बिना नहीं हो सकते।

पत्र के प्रकार—

पत्र के सामान्यत: दो प्रकार होते हैं—

(1) औपचारिक पत्र

(2) अनौपचारिक–पत्र

1. औपचारिक पत्र—औपचारिक पत्र–व्यवहार उन व्यक्तियों के साथ किया जाता है, जिनके साथ पत्र लेखक का कोई निजी या पारिवा. रिक संबंध नहीं होता। ऐसे पत्रों में व्यक्तिगत रुचि की बातें न लिखकर सिर्फ काम की बातें लिखी जाती हैं तथा मुख्यत: सूचनाओं और तथ्यों पर ध्यान दिया जाता है। भाषा पूर्णत: औपचारिक होती है।

2. अनौपचारिक–पत्र—सगे–संबंधियों, मित्रों, रिश्तेदारों, परिचितों आदि को लिखे गए पत्र 'अनौपचारिक पत्र' कहलाते हैं। इन्हें व्यक्तिगत पत्र भी कहा जाता है। इस प्रकार के पत्रों में व्यक्ति के सुख–दु:ख, हर्ष, उत्साह आदि का वर्णन किया जाता है। अनौपचारिक पत्रों की भाषा आत्मीय व हृदय को स्पर्श करने वाली होती है।

पत्र–लेखन की सामान्य विशेषताएँ—

1. पत्र लिखते समय लिखने वाले तथा पत्र प्राप्त करने वाले का नाम व पता लिखना चाहिए।

2. पत्र का विषय स्पष्ट होना चाहिए तथा अनावश्यक बातों को पत्र में नहीं लिखना चाहिए।

3. पत्र लिखते समय क्रमबद्धता पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

4. पत्र का आकार संक्षिप्त होना चाहिए तथा विषय के अनुकूल होना चाहिए। कम शब्दों में अधिक बात कहने की कोशिश करनी चाहिए।

5. पत्र की भाषा सरल, सामान्य, विनम्र, आदर सूचक एवं शुद्ध होनी चाहिए।

6. पत्र अधूरा नहीं होना चाहिए अर्थात् पत्र को इस प्रकार समाप्त किया जाना चाहिए कि पत्र का संदेश स्पष्ट हो सके।

7. पत्र में अधिक काट–छाँट नहीं होनी चाहिए।

❑❑

अध्याय — 3 विज्ञापन लेखन

स्मरणीय बिंदु

वि (विशेष) + ज्ञापन (जानकारी देना) अर्थात् किसी के बारे में विशेष रूप से जानकारी देना ही विज्ञापन है।

आज का युग विज्ञापनों का युग है। रेडियो, दूरदर्शन, समाचार–पत्र तथा पत्रिकाएँ आदि इसके मुख्य साधन हैं। विज्ञापन एक कला है और इसके माध्यम से उत्पादक अपने सामान की गुणवत्ता, सूचना, जानकारी और प्रसिद्धि को जन–जन तक पहुँचाता है। आज तो अधिकतर व्यापार विज्ञापनों द्वारा चलते हैं। विज्ञापनों के लिए कंप्यूटर की सहायता से बड़े ही आकर्षक डिजाइन बनाए जाते हैं। विज्ञापनों का हमारे लिए उपयोग और महत्त्व है।

विज्ञापन लिखते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए–

- विज्ञापन लगभग 50 शब्दों में लिखना चाहिए।
- विज्ञापन का आरंभ सीधा विषय से होना चाहिए।
- वाक्य छोटे–छोटे तथा आपस में जुड़े होने चाहिए।
- भाषा सरल तथा सार्थक होनी चाहिए। विज्ञापनों की भाषा में तुकांत / तुकबंदी वाले शब्दों का प्रयोग करने से विज्ञापन रोचक और प्रभावी हो जाता है।
- अभ्यास तथा प्रयास से विज्ञापन लेखन में कुशलता प्राप्त की जा सकती है।

❑❑

अध्याय — 4 संदेश लेखन

स्मरणीय बिंदु

किसी व्यक्ति विशेष या समूह द्वारा किसी व्यक्ति को या समूह को दिए जाने वाला सुखद–दु:खद समाचार ही संदेश कहलाता है। परन्तु अब समय के साथ इसका रूप बदल गया है।

संदेश हम कई प्रकार से दे सकते हैं—

1. देश या राष्ट्र के नाम संदेश।
2. शुभकामना संदेश।
3. पर्व या त्योहारों पर संदेश।

❑❑